http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 5, 5-6

Article ID:425

सरसों की प्राकृतिक खेती

खुशबू चंद्रा[1], योगेश कुमार अहलावत[2], दिव्या महतो[3] और चंदन किशोर[4]

[1,3,4]बिहार कृषि विश्वविद्यालय, बिहार

[2]चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, मोहाली, चंडीगढ़

परिचय

भारत कृषि प्रधान देश है, और यहां की अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा कृषि पर आधारित है। समय के साथ, आधुनिक खेती के तरीकों ने कृषि उत्पादन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया, लेकिन इसके कारण मिट्टी की उर्वरता, जल की गुणवत्ता और पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। इस समस्या का समाधान प्राकृतिक खेती के रूप में देखा जा सकता है। प्राकृतिक खेती में किसी भी प्रकार के रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है, जिससे पर्यावरण को कोई हानि नहीं होती। भारतीय सरसों की खेती प्राकृतिक तरीके से की जाए तो इससे किसानों को आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ मिल सकते हैं।

बिहार में सरसों की खेती एक महत्वपूर्ण कृषि गतिविधि है, जो राज्य की अर्थव्यवस्था और किसानों की आजीविका में अहम भूमिका निभाती है। सरसों एक तिलहन फसल है, जिसे मुख्य रूप से तेल उत्पादन के लिए उगाया जाता है। बिहार की जलवायु और उपजाऊ मिट्टी सरसों की खेती के लिए अनुकूल मानी जाती है। यह रबी फसल के रूप में अक्टूबर-नवंबर में बोई जाती है और फरवरी-मार्च में कटाई के लिए तैयार हो जाती है।सरसों के बीजों से प्राप्त तेल का उपयोग खाद्य पदार्थों, आयुर्वेदिक औषधियों और सौंदर्य उत्पादों में किया जाता है। इसके अलावा, सरसों की खली पशुओं के चारे के रूप में उपयोगी होती है। बिहार में सरसों की खेती किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करती है और अन्य अनाजों की तुलना में कम लागत में अधिक लाभ देती है।सरसों की खेती जलवायु परिवर्तन के अनुकूल मानी जाती है और कम जल की आवश्यकता के कारण यह जल-संरक्षण में भी सहायक होती है। सरकार की ओर से विभिन्न योजनाओं और अनुदानों के माध्यम से किसानों को सरसों की खेती के प्रति प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे यह फसल बिहार की कृषि प्रणाली में और भी महत्वपूर्ण बन जाती है।

प्राकृतिक खेती का महत्व

प्राकृतिक खेती का मुख्य उद्देश्य कृषि को पर्यावरण के अनुकूल बनाना है। यह खेती जैविक पदार्थों, देशी बीजों और प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके की जाती है। इसमें जीवामृत, घनजीवामृत और गोबर खाद का उपयोग किया जाता है। प्राकृतिक खेती अपनाने से मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है और जल स्तर का संरक्षण होता है। साथ ही, यह किसानों की उत्पादन लागत को कम करके उनकी आय बढ़ाने में सहायक होती है।

सरसों की विशेषताएँ

सरसों भारतीय कृषि में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह तिलहनी फसलों में प्रमुख फसल है, जिसका उपयोग तेल उत्पादन, मसालों और पशु आहार के रूप में किया जाता है। भारतीय सरसों विभिन्न प्रकार की होती है, जैसे कि पीली सरसों, काली सरसों और भूरा सरसों। यह फसल शीत ऋतु में उगाई जाती है और शुष्क एवं अर्ध-शुष्क जलवायु में अच्छी तरह विकसित होती है।

प्राकृतिक खेती द्वारा सरसों की उपज

प्राकृतिक खेती में सरसों की खेती के लिए निम्नलिखित विधियाँ अपनाई जाती हैं:

1. बीज चयन और उपचार - देसी और संकर प्रजातियों के बजाय स्थानीय व जैविक बीजों का उपयोग किया जाता है। बीजों को

नीम पत्ती, गौमूत्र या जीवामृत से उपचारित किया जाता है।

2. मृदा प्रबंधन - भूमि को उर्वर बनाए रखने के लिए गोबर खाद, वर्मीकम्पोस्ट और हरी खाद का प्रयोग किया जाता है।

3. जल प्रबंधन - प्राकृतिक खेती में जल संरक्षण के लिए रेनवॉटर हार्वेस्टिंग, मल्चिंग और ड्रिप सिंचाई तकनीक अपनाई जाती है।

4. कीट एवं रोग प्रबंधन - प्राकृतिक खेती में नीम तेल, छाछ का घोल और जैविक कीटनाशको का उपयोग किया जाता है।

प्राकृतिक खेती के लाभ

1) पर्यावरण संरक्षण - यह पद्धति जल, मिट्टी और वायु को प्रदूषण से बचाती है।

2) कृषि लागत में कमी - रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के स्थान पर प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग होने से लागत कम होती है।

3) स्वास्थ्य के लिए लाभकारी - जैविक फसलों से प्राप्त खाद्य पदार्थ रसायन मुक्त होते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होते हैं।

4) भूमि की उर्वरता बनाए रखना - यह खेती मिट्टी के पोषक तत्वों को बनाए रखती है और जल स्तर को संतुलित रखती है।

5) बाजार में अधिक मूल्य - प्राकृतिक उत्पादों की मांग अधिक होती है, जिससे किसानों को बेहतर मूल्य मिलता है।

निष्कर्ष

भारतीय सरसों की खेती में प्राकृतिक खेती का महत्वपूर्ण योगदान है, क्योंकि यह पर्यावरण के अनुकूल होने के साथ-साथ किसानों के लिए भी फायदेमंद है। प्राकृतिक खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता, जिससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है और जैव विविधता को बढ़ावा मिलता है। यह पद्धति सरसों की गुणवत्ता और उत्पादन को सुरक्षित रखते हुए लागत में कमी लाती है, जिससे छोटे और मध्यम स्तर के किसानों को अधिक लाभ प्राप्त होता है। सरसों की खेती को प्राकृतिक खेती के माध्यम से बढ़ावा देने से न केवल किसानों को आर्थिक लाभ होगा, बल्कि यह पर्यावरण और समाज के लिए भी लाभकारी सिद्ध होगा। प्राकृतिक खेती टिकाऊ कृषि प्रणाली को बढ़ावा देती है और मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखते हुए उत्पादन बढ़ाती है। प्राकृतिक खेती में गोबर खाद, जैविक खाद और जीवामृत जैसे जैविक इनपुट का उपयोग किया जाता है, जिससे सरसों की फसल अधिक पोषक और स्वस्थ होती है। इसके अलावा, इस विधि से उत्पादित सरसों के तेल की मांग भी बढ़ रही है, क्योंकि उपभोक्ता जैविक उत्पादों को अधिक प्राथमिकता दे रहे हैं।सरकार भी प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएँ चला रही है, जिससे किसानों को इस दिशा में प्रेरित किया जा सके। प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए जागरूकता अभियान, प्रशिक्षण कार्यक्रम और आर्थिक सहायता प्रदान करनी चाहिए, जिससे अधिक किसान इस पद्धति को अपनाकर लाभान्वित हो सकें।यह पद्धति न केवल लागत प्रभावी है, बल्कि यह जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और दीर्घकालिक कृषि स्थिरता सुनिश्चित करने में भी मदद करती है। इसलिए, भारतीय सरसों की खेती में प्राकृतिक खेती एक टिकाऊ और लाभदायक विकल्प साबित हो रही है।